प्रभात खबर
शनिवार, 21 जनवरी, 2017
मूल्य : 1.00 (साप्ताहिक)

हमारा बाल प्रभात

इस 26 जनवरी को हम अपना 68वां गणतंत्र दिवस मनाने जा रहे हैं. वर्ष 1950 में इसी दिन हमें अपना संविधान मिला था. इसके लिए देश के कई महापुरुषों ने अपना अहम योगदान दिया. उन महापुरुषों को नमन करने के साथ-साथ यह दिवस हमें अपने कर्तव्यों की याद दिलाता है. आओ हम सभी मिल कर मनाएं गणतंत्र दिवस.

“अपने देश को एक विकसित राष्ट्र बनाने के लिए आपस में समानता और भाईचारे के भाव को अपनाना होगा.”

■ डॉ बीआर आंबेडकर

हमारा प्यारा गणतंत्र

हैप्पी रिपब्लिक डे

www.rajteachers.com

डियर फ्रेंड्स

सभी को गणतंत्र दिवस की बहुत-बहुत बधाई! तुमने किताबों में पढ़ा होगा कि भारत विश्व का सबसे बड़ा गणतांत्रिक देश है. यहां सभी धर्मों, समुदायों के लोग मिल-जुल कर रहते हैं. दोस्तो, यही बात हमारे राष्ट्र को विश्व समुदाय में सबसे ऊंचा स्थान दिलाता है. गणतंत्र दिवस वह दिन है, जब भारत को अपना संविधान प्राप्त हुआ. यहां के नागरिकों को अपना कानून व अधिकार मिला. इस दिन को लाकर तब के हमारे महान नेताओं ने अपनी जिम्मेवारी तो पूरी की, अब इसे संभालने व सहेजने की बारी तुम सब की है. अगर तुम खुद में अनुशासित रहना सीख रहे हो, घर-स्कूल के नियम-कानून को बखूबी मानते हो, सभी के साथ भाईचारा निभाना जानते हो, तभी बड़े होकर इस गणतंत्र के जिम्मेवार नागरिक कहलाओगे. अगर सभी लोग ऐसा करें, तभी सही मायने में हमारा देश सबके लिए आदर्श राष्ट्र बनेगा. यह सब एक दिन में नहीं हो सकता. छोटे-छोटे कदमों से तुम्हें शुरुआत करनी होगी. गणतंत्र दिवस विशेषांक में भारत के संविधान पर मुख्य आलेख है, तो हर पन्ने पर रोचक व प्रेरणात्मक जानकारियां प्रस्तुत हैं. आशा है भैया की बातों का पालन करोगे. आओ, हम सब मिल कर मनाएं यह महान पर्व. **हैप्पी रिपब्लिक डे!**

हमारे गणतंत्र के परमवीर

26 जनवरी, 1950 को हमारे भारतीय गणतंत्र के जन्म से अब तक हमारा देश अनेक बाधाओं और रुकावटों को पार करते हुए भव्यता के साथ प्रगति के मार्ग पर आगे बढ़ रहा है. इस दौरान अपने देश को एक सफल गणतंत्र बनाने में हमारे देश के कई वीर सपूतों ने अपने प्राणों की आहूति भी दी है. गणतंत्र दिवस, उन शहीदों के प्रति सम्मान व्यक्त करने और श्रद्धांजलि देने का भी मौका है. इसी दिन देश की सुरक्षा के लिए तैनात जवानों को अशोक चक्र, महावीर चक्र और परमवीर चक्र से सम्मानित किया जाता है. गणतंत्र दिवस के मौके पर तुम्हारा परिचय अपने गणतंत्र के उन परमवीर योद्धा के शौर्य से करवाने जा रहे हैं, जिन्हें युद्ध काल में अदम्य साहस और शौर्य दिखाने के लिए परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया है. देश के 21 वीरों को अब तक यह सर्वोच्च वीरता पुरस्कार मिल चुका है. आगे के पृष्ठों पर तुम भी जानो इन वीरों की शौर्यगाथा.

मेजर सोमनाथ शर्मा

4 कुमाऊं रेजिमेंट, बड़गाम, कश्मीर

देश की आजादी के तुरंत बाद 3 नवंबर, 1947 को पाकिस्तान द्वारा किये गये हमले में मेजर सोमनाथ शर्मा ने दुश्मन का डट कर मुकाबला किया. लड़ाई के दौरान ही 3 नवंबर, 1947 को मेजर शर्मा शहीद हुए. वीरता के साथ लड़ते हुए मिली शहादत ने इनके साथी सैनिकों को बहुत प्रेरित किया. इन्हें मरणोपरांत परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया. इनका जन्म 31 जनवरी, 1923 को जम्मू के कांगड़ा जिले में हुआ था.

जानकारियां, जो काम आयेंगी जीवन भर

क्या है बीटिंग द रिट्रीट

बीटिंग द रिट्रीट हमारे देश में गणतंत्र दिवस के अवसर पर हुए आयोजनों की आधिकारिक रूप से समापन की घोषणा है. इसका आयोजन गणतंत्र दिवस समारोह के तीसरे दिन 29 जनवरी की शाम को किया जाता है. इस कार्यक्रम में सेना के तीनों अंग थल सेना, वायु सेना और नौसेना के बैंड पारंपरिक धुन के साथ मार्च करते हैं. इसका आयोजन राष्ट्रपति भवन रायसीना हिल्स में किया जाता है, जिसके चीफ गेस्ट राष्ट्रपति होते हैं. यह सेना की बैरक वापसी का प्रतीक है. इस आयोजन की शुरुआत तीनों सेनाओं द्वारा सामूहिक बैंड वादन से आरंभ होता है, जो लोकप्रिय मार्चिंग धुनें बजाते हैं. इस दौरान ड्रमर भी एकल प्रदर्शन करते हैं. ड्रमर्स द्वारा एबाइडिड विद मी धुन बजायी जाती है. यह धुन महात्मा गांधी की प्रिय धुनों में से एक कही जाती है. इस दौरान एक मनमोहक दृश्य बनता है. इसके बाद रिट्रीट का बिगुल वादन होता है. फिर बैंड मास्टर राष्ट्रपति के नजदीक जाते हैं और बैंड वापस ले जाने की अनुमति मांगते हैं. तब सूचित किया जाता है कि समापन समारोह पूरा हो गया है. बैंड मार्च वापस जाते समय लोकप्रिय धुन 'सारे जहां से अच्छा हिंदोस्तां हमारा' बजाते हैं. ठीक शाम छह बजे बगलर्स रिट्रीट की धुन बजाते हैं और राष्ट्रीय ध्वज को उतार लिया जाता है तथा राष्ट्रगान गाया जाता है. इस प्रकार गणतंत्र दिवस के आयोजन का औपचारिक समापन होता है. इस दौरान राजपथ का नजारा भव्य होता है.

अब तक दो बार रद्द हुआ कार्यक्रम

वर्ष 1950 से अब तक भारत के गणतंत्र बनने के बाद बीटिंग द रिट्रीट कार्यक्रम को दो बार रद्द करना पड़ा है. पहली बार 26 जनवरी, 2001 को गुजरात में आये भूकंप के कारण और दूसरी बार ऐसा 27 जनवरी, 2009 को देश के आठवें राष्ट्रपति वेंकटरमन का लंबी बीमारी के बाद निधन हो जाने पर किया गया.

ब्रिटेन की है यह परंपरा

बीटिंग रिट्रीट सोलहवीं सदी के दौरान ब्रिटेन में आयोजित होनेवाली परंपरा है. इस परंपरा के तहत सूर्यास्त होने पर फौज किले में वापस चली जाती थीं, लेकिन भारत में यह समारोह गणतंत्र दिवस परेड के आधिकारिक समापन का सूचक है. इस दिन शानदार ढंग से विदाई समारोह आयोजित होता है और इस रस्म में राष्ट्रपति विशेष तौर से पधारते हैं. इसके बाद सेना बैरक लौट जाते हैं.

अपडेट

वर्ल्ड इकोनॉमिक फॉरम (डब्लूइएफ) की एक रिपोर्ट के मुताबिक, वर्ष 2050 तक समुद्रों में मछलियों से अधिक प्लास्टिक होगा. रिपोर्ट में इसके रिसाइक्लिंग पर भी जोर देने की बात कही गयी है. इसके मुताबिक, 20 प्रतिशत प्लास्टिक पैकेजिंग का दोबारा इस्तेमाल किया जा सकता है. वहीं इस्तेमाल के बाद की प्रबंधन प्रणाली में भी सुधार किया जा सकता है.

अब तक चांद पर जा चुके लोगों में से वहां जानेवाले आखिरी व्यक्ति और अमेरिकी अंतरिक्षयात्री यूजिन सरनेन का 82 वर्ष की उम्र में निधन हो गया. नासा ने उनके निधन की जानकारी दी. सरनेन वर्ष, 197 2 में अपोलो 17 अंतरिक्षयान के कमांडर थे. उन्होंने तीन बार अंतरिक्ष की यात्रा की थी. अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा ने ट्वीट में उन्हें श्रद्धांजलि दी.

पिनाकारॉकेट से विकसित किये गये निर्देशित पिनाका का चांदीपुर स्थित समेकित परीक्षण रेंज से पिछले दिनों सफल परीक्षण किया गया. पिनाका रॉकेट मार्क-1 से विकसित किये गये पिनाका रॉकेट मार्क-2 नौवहन, निर्देशन और नियंत्रण किट से लैस है तथा इसे निर्देशित पिनाक में बदल लिया गया है.

सोशलमीडिया साइट से लोगों में नकारात्मकता फैलने का पता एक नये शोध से चला है. शोध के मुताबिक, सोशल साइट्स यूजर्स में उस समय जलन की भावना पैदा हो जाती है, जब वह अपने से ज्यादा खुशहाल दिखनेवाले किसी अन्य ऑनलाइन दोस्त को देखते हैं.

राष्ट्र का गौरव है राष्ट्रीय ध्वज

तुम्हें पता है कि प्रत्येक स्वतंत्र राष्ट्र का अपना एक ध्वज होता है. यह किसी भी देश के स्वतंत्र होने का संकेत होता है. भारतीय राष्ट्रीय ध्वज को इसके वर्तमान स्वरूप में 22 जुलाई, 1947 को आयोजित भारतीय संविधान सभा की बैठक के दौरान अपनाया गया था, जो अंगरेजों से भारत की स्वतंत्रता के कुछ ही दिन पूर्व की गयी थी. इसे 15 अगस्त, 1947 और 26 जनवरी, 1950 के बीच भारत के राष्ट्रीय ध्वज के रूप में अपनाया गया और इसके बाद भारतीय गणतंत्र ने भी इसे अपनाया. भारतीय राष्ट्रीय ध्वज में तीन रंग की क्षैतिज पट्टियां हैं, सबसे ऊपर केसरिया, बीच में सफेद ओर नीचे गहरे हरे रंग की पट्टी और ये तीनों समानुपात में हैं. ध्वज की चौड़ाई का अनुपात इसकी लंबाई के साथ दो और तीन का है. सफेद पट्टी के मध्य में गहरे नीले रंग का एक चक्र है. यह चक्र अशोक की राजधानी के सारनाथ के शेर के स्तंभ पर बना हुआ है. इसका व्यास लगभग सफेद पट्टी की चौड़ाई के बराबर होता है और इसमें 24 तीलियां है.

ध्वज के तीन रंग

भारत के राष्ट्रीय ध्वज की ऊपरी पट्टी में केसरिया रंग है, जो देश की शक्ति और साहस को दरसाता है. बीच में स्थित सफेद पट्टी धर्म चक्र के साथ शांति और सत्य का प्रतीक है. निचली हरी पट्टी उर्वरता, वृद्धि और भूमि की पवित्रता को दरसाती है.

इसका धर्म चक्र

इस धर्म चक्र को विधि का चक्र कहते हैं, जो तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व मौर्य सम्राट अशोक द्वारा बनाये गये सारनाथ मंदिर से लिया गया है. इस चक्र को प्रदर्शित करने का आशय यह है कि जीवन गतिशील है और रुकने का अर्थ मृत्यु है.

बनी है ध्वज संहिता

26 जनवरी, 2002 को भारतीय ध्वज संहिता में संशोधन किया गया और स्वतंत्रता के कई वर्ष बाद भारत के नागरिकों को अपने घरों, कार्यालयों और फैक्टरी में न केवल राष्ट्रीय दिवसों पर, बल्कि किसी भी दिन बिना किसी रुकावट के फहराने की अनुमति मिल गयी है, बशर्ते कि संहिता के नियमों का कड़ाई से पालन हो. सुविधा की दृष्टि से भारतीय ध्वज संहिता, 2002 को तीन भागों में बांटा गया है. संहिता के पहले भाग में राष्ट्रीय ध्वज का सामान्य विवरण है. संहिता के दूसरे भाग में जनता, निजी संगठनों, शैक्षिक संस्थानों आदि द्वारा ध्वज के प्रदर्शन के बारे में बताया गया है.

वर्ष : 2, अंक : 76 आरएनआई रजिस्ट्रेशन : JHAHIN/2015/66392, न्यूट्रल पब्लिशिंग हाउस लि. के लिए. मुद्रक एवं प्रकाशक : आशुतोष चौबे द्वारा न्यूट्रल पब्लिशिंग हाउस लि., एम.एच.आई. बिल्डिंग, ओल्ड हजारीबाग रोड, कोकर, रांची-834001, (झारखंड) से मुद्रित और न्यूट्रल पब्लिशिंग हाउस लि., 15-पी, कोकर इंडस्ट्रियल एरिया, रांची (झारखंड) से प्रकाशित. संपादक : विजय पाठक*(पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार.)

आओ मनाएं संविधान की वर्षगांठ

मैं किचन में रात के खाने की तैयारी कर रही थी. तभी प्रगति आयी और ठुनकते हुए कहने लगी- मां, इस बार 26 जनवरी को मेरे स्कूल में गणतंत्र दिवस के अवसर पर वाद-विवाद प्रतियोगिता रखी गयी है. मैं भी उसमें भाग ले रही हूं. भैया को मैंने कल रात ही बताया था. उसने प्रॉमिस भी किया था. आज शाम को वह मुझे बतायेगा कि गणतंत्र दिवस क्यों मनाया जाता है? संविधान का मतलब क्या है? यह कब और कैसे बना? हम बच्चों के लिए संविधान में क्या कहा गया है? इस दिन खास क्या-क्या होता है? लेकिन, देखो न घर के बाहर उसके दोस्तों की टोली उसे क्रिकेट खेलने के लिए बुलाने आयी है. भैया को बोलो न आज खेलने नहीं जाये. मैंने प्रगति को गले लगाते हुए कहा- मेरी परी उदास मत हो. चलो मेरे साथ. मैं दोनों बच्चों के लिए दूध का गिलास ले कर उनके कमरे में पहुंची. शौर्य अपना क्रिकेट किट पैक कर रहा था. मैंने उसे दूध का गिलास देते हुए प्रगति की सारी बातें बतायीं. वह ठठा कर हंस पड़ा. फिर प्रगति की चोटी को खींचते हुए बोला- ओए मेरी गिलहरी बस इतनी-सी बात. अच्छा चलो आज मैं तुम्हें गणतंत्र दिवस मनाने का राज बताता हूं.

प्रियंका जायसवाल
Jaiswalpriyanka11@gmail.com

300 लोगों ने खींची गणतंत्र की रूपरेखा : मेरी प्यारी गिलहरी तुम्हें तो पता है न 15 अगस्त, 1947 को हम स्वतंत्रता दिवस मनाते हैं, क्योंकि उस दिन हम अंगरेजों की गुलामी से आजाद हुए, लेकिन उसके बाद देश के राजनेताओं के पास प्रश्न यह था कि देश में कैसा शासन हो? क्योंकि अंगरेजों ने अपने नियम-कानून बनाये थे, जो बड़े ही कष्टकारी थे. ऐसे में देश के प्रत्येक नागरिक को समान माना जाये, उन्हें तमाम सुविधाएं मुहैया करवायी जाएं और देश को चलाने में सबकी भागीदारी हो. इसे सुनिश्चित करने के लिए वर्ष 1946 में 300 लोगों की एक सभा का गठन किया गया, जिसके अध्यक्ष डॉ भीमराव आंबेडकर बने. उनकी देख-रेख में सदस्यों ने देश के बारे में तीन साल अध्ययन किया. इस दौरान विश्व के अन्य देशों के शासन के तरीकों व नागरिकों की स्थिति को देखा-परखा व जांचा गया. उनमें से आयरलैंड, फ्रेंच, सोवियत रूस, जापान के शासन के तरीकों को भारत के लिए चुना गया. इस तरह कुल मिला कर 2 साल, 11 महीने और सत्रह दिन के निरंतर शोध के बाद एक नियमावली तैयार की गयी, जिसका नाम दिया गया 'संविधान'. इसमें यह स्पष्ट रूप से बताया गया कि इस पुस्तिका में लिखे नियम के अनुसार भारत के नागरिकों की देखभाल की जायेगी. इसके लिए एक व्यवस्था होगी- लोकतांत्रिक व्यवस्था. इसमें देश की जनता चुनाव के द्वारा देश को चलानेवाले प्रतिनिधि का चयन करेंगे, जिसे ही सरकार कहा गया. इस तरह देश के नियम-कानून की यह पुस्तक 26 जनवरी, 1950 को देशवासियों को समर्पित किया गया. इसी दिन डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद भारत के पहले राष्ट्रपति बने. तब से लेकर अब तक हर साल उल्लास के संग 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस के रूप में मनाते हैं. लेकिन, भैया 26 जनवरी ही क्यों? अरे, गिलहरी बड़ी होशियार हो गयी है. इस दिन को इसलिए भी चुना गया, क्योंकि, देश की गुलामी के दौरान 26 जनवरी, 1930 को पूर्ण स्वराज का नारा दिया गया था. मगर भैया क्या संविधान में बदलाव किया जाता है? हां, प्रगति समय-समय पर देश की स्थिति व जरूरत के हिसाब से नियमों में बदलाव किया जाता है, जिसे संशोधन कहा जाता है. अकसर, जब संसद में सत्र चलता है. तब सरकार के दोनों पक्षों के बीच चर्चा के बाद होता है संशोधन.

वर्ष 1946 में 300 लोगों की एक सभा का गठन किया गया, जिसके अध्यक्ष डॉ भीमराव आंबेडकर बने. उनकी देख-रेख में सदस्यों ने देश के बारे में तीन साल अध्ययन किया. इस दौरान विश्व के अन्य देशों के शासन के तरीकों व नागरिकों की स्थिति को देखा-परखा व जांचा गया.

बच्चों को भी मिला अधिकार : देश के नागरिक होने के नाते बच्चों के भी बारे में संविधान के भाग चार में मौलिक अधिकार के शीर्षक से लिखा गया है. बच्चे देश की अमूल्य संपदा हैं. उनकी अच्छी देखभाल, शिक्षा, बाल श्रम से मुक्ति सरकार का दायित्व है, जिसकी पूर्ति हेतु महिला व बाल कल्याण मंत्रालय, शिक्षा मंत्रालय, राष्ट्रीय संरक्षण आयोग काम करता है.

गणतंत्र दिवस समारोह : स्कूल में तो हम गणतंत्र दिवस मनाते ही हैं, लेकिन इसका मुख्य समारोह देश की राजधानी दिल्ली में भव्यता के साथ मनाया जाता है. सबसे पहले देश के अमर शहीदों को राजपथ स्थित अमर जवान ज्योति पर प्रधानमंत्री व राष्ट्रपति श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं. फिर जल, थल व वायु तीनों सेनाओं की टुकड़ियां, बैंड़ों की धुन पर मार्च करती हैं. पुलिस के जवान, विभिन्न प्रकार के अस्त्र-शस्त्र, मिसाइल, टैंक, वायुयान आदि का प्रदर्शन करते हैं. वे देशवासियों को यह विश्वास दिलाते हैं कि वे सशक्त हैं उनकी सुरक्षा में सक्षम हैं. उसके बाद देश के हर राज्य की झांकियां प्रस्तुत की जाती हैं, जिससे रंग-बिरंगे भारत के बारे में पता चलता है.

अतिथि देवो भव: की भावना

अतिथि जिन्हें तुम गेस्ट के नाम से भी जानते हो. उनका सम्मान करना हमारे यहां की परंपरा है. इस राष्ट्रीय पर्व के दौरान अपनी खुशी को साझा करने के लिए किसी दूसरे देश के प्रमुख को हम अतिथि बना कर बुलाते हैं. यह परंपरा पहले गणतंत्र दिवस से चली आ रही है. हमारे पहले अतिथि इंडोनेशिया के राष्ट्रपति सुकर्णो थे. वहीं इस वर्ष आबूधाबी के युवराज शेख मोहम्मद बिन जायेद अल नायान इस दिन अतिथि के रूप में शामिल होंगे.

बैड टच को रोकने का तंत्र पॉक्सो

बच्चो, संविधान के द्वारा तुम्हें स्वच्छंद व निडर हो कर जीने का अधिकार दिया गया है. तुम्हें वैसे लोगों से डरने की जरूरत नहीं हैं, जो तुम्हें गलत तरीके से छूते हैं. गंदी तसवीर दिखाते हैं. गंदी बातें करते हैं. उनके बारे में तुम राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग की बेवसाइट ncpcr.gov.inकी 'पॉक्सो इ-बॉक्स' विंडों पर जा कर अपनी शिकायत निडर होकर दर्ज करा सकते हो या फिर मोबाइल नंबर- 9868235077 पर भी फोन कर अपनी बात बता सकते हो.

देश के जवान व बहादुर बच्चों का सम्मान

गणतंत्र दिवस के दिन सुरक्षा के लिए तैनात जवानों को अशोक चक्र, महावीर चक्र और परमवीर चक्र से सम्मानित किया जाता है, तो दूसरी ओर अपनी जान पर खेल कर दूसरों की मदद करनेवाले बच्चों को भी राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है. इसकी शुरुआत 14 साल के बालक हरिशचंद्र से हुई, बात 2 अक्तूबर, 1957 की है, दिल्ली के रामलीला मैदान में एक समारोह के दौरान टेंट में आग लग गयी थी. उस समारोह में भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू भी शामिल थे. हरिशचंद्र ने बहादुरी दिखा कर चाकू से टेंट को चीर कर हजारों लोगों की जान बचायी थी. इस घटना के बाद तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के सुझाव पर बच्चों के लिए राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार की शुरुआत हुई. इस वर्ष बहादुरी से दूसरों के लिए उदाहरण बने. इस वर्ष 25 बच्चों को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 23 जनवरी को राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार देंगे. इनमें 12 लड़कियां और 13 लड़के शामिल हैं. ये बच्चे गणतंत्र दिवस परेड में भी शामिल होंगे. इस वर्ष चार बच्चों को बहादुरी अवार्ड मरणोपरांत दिया जा रहा है. यह पुर स्कार हर साल 6 से 18 वर्ष के बच्चों को दिया जाता है.

अपनी जान देकर दो सहेलियों को बचा लिया : अरुणाचल प्रदेश की आठ वर्ष की तार पीजू पिछले वर्ष मई में अपनी सहेलियों के साथ नदी पार करके फॉर्म हाउस जा रही थी. तभी नदी की तेज धारा में उसकी दो सहेलियां बह गयीं. तार पीजू ने पानी में छलांग लगा कर अपनी दोनों सहेलियों की जान बचा ली, लेकिन खुद तार पीजू नदी की बालू में फंस गयी. उसे बचाया नहीं जा सका. प्राणों की आहूति देकर अपार साहस का परिचय देनेवाली तार पीजू को **भारत अवार्ड** से सम्मानित किया जा रहा है.

अंतरराष्ट्रीय ट्रैफिकिंग रैकेट का भांडाफोड़ किया : इस बार गीता चोपड़ा अवार्ड पश्चिम बंगाल के दार्जिलिंग की रहनेवाली 17 साल की तेजस्विता प्रधान और साढ़े 16 साल की शिवानी गोंद को दिया जा रहा है. उन्होंने फेसबुक के जरिये एक अंतरराष्ट्रीय ट्रैफिकिंग रैकेट का भांडाफोड़ किया. दरअसल, दार्जिलिंग से बड़ी तादाद में बच्चों की तस्करी की जाती है. नेपाल के एक एनजीओ ने जब इनके क्लब को एक लड़की के गायब होने की सूचना दी, तो दोनों लड़कियों ने गायब हुई लड़की से पहले तो फेसबुक पर दोस्ती की और फिर नौकरी की तलाश का बहाना बना कर उसके जरिये रैकेट का पर्दाफाश किया. आरोपी नयी दिल्ली में पकड़ा जा चुका है.

सुमित ने तेंदुए को मार भगाया : उत्तराखंड के 14 साल के सुमित अपने बड़े भाई के साथ खेत में जा रहे थे. तभी झाड़ियों में छिपे तेंदुए ने उन पर हमला कर दिया. सुमित ने आव देखा न ताव, तेंदुए की पूंछ पकड़ ली और उस पर ताबड़तोड़ दरांती से वार किये. तेंदुआ भाग खड़ा हुआ. बड़े भाई रीतेश के सिर से खून बह रहा था, जिसको सुमित ने अस्पताल पहुंचाया.

भाई-बहन ने चोर को पकड़ा : दिल्ली में रहनेवाले अक्षित और अक्षिता भी हिम्मत और बहादुरी की शानदार मिसाल हैं. दोनों स्कूल से घर लौटे तो दरवाजा अंदर से बंद मिला. दोनों ने चोर-चोर से चिल्लाया तो पड़ोसी वहां आ पहुंचे और चोर पकड़ा गया और उसे पुलिस के हवाले कर दिया.

आयशा अकबर-8, उर्दू मध्य विद्यालय, ईमादपुर

अमित कुमार-9 , एरो इंगलिश स्कूल, दरभंगा

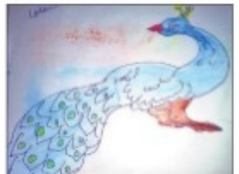

अनुराग गुप्ता-1ए, संत एंथनी स्कूल, डोरंडा, रांची

कुमार वैभव-2सी, संत फ्रांसिस स्कूल, रांची

हम नहीं कम

गणतंत्र दिवस के अवसर पर
सुनिए अंकित की एक बात
अगर दुश्मन आंख उठाये तो
उस आंख पर करिए आघात
आदमी का बदल रहा है व्याकरण
कथनी से अलग है सबका आचरण
मेरी छोटी बात पर गौर फरमाएं
कथनी व करनी में समन्वय लाएं
इस देश के लाल में है बहुत दम
जान लो हम नहीं हैं किसी से कम.

अंकित, बूटी मोड़

प्यारा हिंदुस्तान

सबसे अलग है जिसकी पहचान
जिस पर है हम सब को अभिमान
जिसके हैं हम सब संतान
वह है हमारा प्यारा हिंदुस्तान
हिंदू, मुसलिम, सिख, ईसाई
आपस में हैं भाई-भाई
जिसकी किस्मत थी अच्छी
उसी ने भारत मां की गोद पायी
रंग-रूप का भेद नहीं
जाति-धर्म पर क्लेश नहीं
यहां तो बहती है प्रेम की गंगा
भारत जैसी संस्कृति
और कहीं नहीं
नारी का ऊंचा स्थान
जो है हमारे देश की शान
इसलिए तो सभी कहते हैं
हमारा प्यारा हिंदुस्तान.

श्याम बाबू, जादोपुर

मेरा गणतंत्र

सूरज दादा ने
जब आंखें खोली
डालियों पर बैठी
यूं ही चिड़िया बोली
ले लो सभी झंडा
मेरे हाथी दादा
गणतंत्र दिवस को
मिल कर हम मनायेंगे
राष्ट्रगान हम गायेंगे
सेव-बुंदिया बंटेगी
जलेबी भी आधी-आधी
मिल बांट कर खायेंगे.

प्रियल कुमारी, शिशु मंदिर, जादोपुर

सोनाली कुमारी-11, डीएवी, रांची

ममता की छांव

जीना चाहता हूं
फिर उसी छांव में
हंसना चाहता हूं
फिर उसी छांव में
सोना चाहता हूं
फिर उसी छांव में
ममता की छांव में
जीवन जाने
किस वेग से चला है
और कहां जा रुकेगा
यह जीवन
फिर भी दो पल
जी लूं उसी छांव में
ममता की छांव में.

शुभम ठाकुर, रमय, अररिया

गणतंत्र दिवस

देश की रक्षा खातिर हरदम
हमें आगे बढ़ते जाना है
आ गया गणतंत्र दिवस
शान से तिरंगा फहराना है
आज के दिन ही लागू हुआ था
हमारा भारतीय संविधान
हमारे बलिदानी नेताओं ने
देश में बनायी पहचान
देश के नगर, गांव-गांव में
धूमधाम से यह मनाया जाता है
प्रेरणा, प्रतिज्ञा का है दिवस
गणतंत्र हमें सिखलाता है
स्कूलों की है पूरी तैयारी
सभी के दिल में बड़ा प्यार है
हम नटखट बच्चों को तो
जलेबी का रहता इंतजार है
26 जनवरी हम सबों का
महत्वपूर्ण राष्ट्रीय पर्व है
महान अमर शहीदों पर
देश को बड़ा गर्व है.

सम्राट समीर-10, कदमकुआं, पटना

बड़ा नाम करो

जग का बड़ा नाम करो
भारत का गुणगान करो
तुम हो इस देश के सुपुत्र
अपने देश का नाम महान करो
जीवन तो है चार दिनों की
इसमें ही देश का सम्मान करो
तुम हो धरती मां के बेटे
इसे तुम स्वर्ग बनाओ
यह देश तुम्हारा अपना है
इस देश पर तुम नाज करो
जग में बड़ा नाम करो
कुछ ऐसा तुम काम करो.

आयुष कुमार+2 इमामगंज, गया

गरीबों की बस्ती

है याद यही, स्मरण यही
हम कुछ गा कर सुनायेंगे
गरीबों की बस्तियों में
हम अपना पसीना बहायेंगे
जो लोग कठिन जीवन जीते हैं
जिनको न कोई देखनेवाला है
हम उनको सज्जन बनायेंगे
हम उनको सम्मान देंगे
रोको मत, कुछ कह लेने दो
ये गरीबों की बस्तियां हैं
हम गरीबों की सेवा करने में
अपना सर्वस्व लगायेंगे
हम उन मांओं के बच्चे हैं
जो दिल के भोले व सच्चे हैं
हम गरीबों को ऊंचा उठायेंगे
हम उनको अधिकार दिलायेंगे.

आयुष कुमार चौधरी, बाजिदपुर, समस्तीपुर

सुबह हुई

उठो दोस्तो आंखें खोलो
बिस्तर छोड़ो और मुंह धोलो
इतना सोना ठीक नहीं है
समय का खोना ठीक नहीं है
सुबह हुई है वक्त सुहाना
गाओ भजन और खुदा का तराना
सूरज निकला तारे भागे
दुनियावाले सारे जागे
देखो बाग में कलियां महकीं
डालों पर भी चिड़िया चहकीं
ठंडा वक्त और सर्द हवा है
तुम भी उठ कर बाहर आओ
इस दृश्य का आनंद उठाओ.

सुहानी, लिटिल रोज पब्लिक स्कूल, मधुबनी

मेढक का सपना

रजाई में दुबक कर मेढक
मजे से सोया था
सोये-सोये सपने में
गढ़ रहा था किस्से
तारों से बातें करने का
सूरज से मिलने का
मछलियों संग खेलने का
जमीं को ढेरों खुशियां देने का
सबसे मिल कर रहने का.

मुनदुन राज, पटना

गणतंत्र दिवस पर देश के वीर सपूतों को हमारा नमन

कर्तव्यों की याद दिलाता है गणतंत्र दिवस

हर साल इस विशेष दिवस का हमें बेसब्री से इंतजार रहता है. यह दिवस हम जैसे देश के प्रत्येक नागरिक को उसके कर्तव्यों की याद दिलाता है. इस त्योहार पर हमें प्रण लेना चाहिए कि हम एक देशभक्त एवं कर्मठ नागरिक बन कर अपने देश की तन-मन-धन से सेवा करेंगे. हमारा बाल प्रभात के सभी मित्रों को गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएं.

श्याम बाबू, जादोपुर, गोपालगंज

हम सभी करें अपने संविधान का सम्मान

हमारे जीवन में 26 जनवरी का बहुत ही विशेष महत्व है. आज हमें जितने भी अधिकार प्राप्त हैं, उसमें इस दिवस की भूमिका अतुलनीय है. बीआर अंबेडकर, डॉ राजेंद्र प्रसाद जैसे कई महापुरुषों की देन है कि आज हम एक सफल गणतंत्र के वासी है. जरूरत बस इतनी-सी है कि हम सभी अपने संविधान का सम्मान करें. उसका पालन करें.

सौरभ सत्संगी-10, दरभंगा पब्लिक स्कूल, दरभंगा

इस दिन का बेसब्री से रहता है इंतजार

गणतंत्र दिवस हमारा राष्ट्रीय पर्व है. इस दिन का मुझे बेसब्री से इंतजार रहता है. इस अवसर पर मैं सांस्कृतिक कार्यक्रम और खेल-कूद प्रतियोगिताओं भाग लूंगी. मैं भी इस मौके पर स्कूल में झंडा फहराने के बाद सभी दोस्तों के साथ गांधी मैदान जाऊंगी. वहां मैं जलेबी भी खाऊंगी. सभी पाठकों को गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं.

शिल्पा कुमारी यादव-9, आर्या कन्या हाइ स्कूल, लक्ष्मीपुर

संविधान की वजह से हैं हम सुखी-संपन्न

यह हम सभी के जीवन के लिए एक अद्भुत दिवस है. इसी दिन हमें अपना संविधान मिला. अपनी नागरिकता का अधिकार मिला. आज हम सुखी-संपन्न हैं, तो इसके पीछे हमारा संविधान है. पूरी दुनिया के सामने भारतीय गणतंत्र अनेकता में एकता की एक मिसाल है. देश वीर सपूतों के त्याग की वजह से आज हमारा देश गणतांत्रिक हो सका.

अनंत गुप्ता-10, गढ़वा

पूर्वजों की कठिन तपस्या का स्मृति दिवस

इस दिन का हरेक भारतीय के जीवन में एक विशेष महत्व है. गणतंत्र दिवस के आते ही स्मृतियों का सैलाब उमड़ता है. यह हमारी प्रतिज्ञाओं और हमारे पूर्वजों की कठिन तपस्याओं का स्मृति दिवस है. हमें अपने गणतंत्र को और भी बेहतर बनाने के लिए हमेशा बेहतर प्रयास करते रहना होगा, तभी हम पूर्वजों के बलिदान का सार्थक लाभ ले पायेंगे.

सम्राट समीर-10, पटना

संविधान ने दिया हमें अधिकार

गणतंत्र दिवस हमारे देश का राष्ट्रीय पर्व है. 15 अगस्त, 1947 को हम भले अंगरेजों से आजाद हो गये थे, लेकिन उस समय यह आजादी सिर्फ मुट्ठी भर लोगों के लिए थी. लेकिन बी आर आंबेडकर, डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद, सरोजनी नायडू, आदि की वजह से हमें 26 जनवरी, 1950 को हमें अपना संविधान मिला. गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएं.

प्रीति कुमारी, सीवान

इसी तरह आगे बढ़ता रहे हमारा देश

इस वर्ष 26 जनवरी को हम सभी अपना 68वां गणतंत्र दिवस मनायेंगे. मैं अपने देश पर काफी गौरवान्वित महसूस करता हूं. क्योंकि, आज हम दुनिया के ताकतवर, सशक्त और समृद्ध देशों की सूचि में खड़े हो गये हैं. आज हमारा देश जिस तेजी से विकास की राह में अग्रसर है, उसके पीछे हमारे संविधान की भूमिका बेहद अहम है.

पप्पू कुमार ,समस्तीपुर

भ्रष्टाचारमुक्त भारत बनाने का लें संकल्प

गणतंत्र दिवस पर हम बाल दोस्त एक साथ अपने देश को भ्रष्टाचार मुक्त बनाने का संकल्प ले. भ्रष्टाचार एक जहर है, जो देश, संप्रदाय व समाज के गलत लोगों के दिमाग में फैला रहता है. संविधान का अनादर करनेवाले ऐसे लोगों की वजह से हम आज एक सशक्त राष्ट्र होते हुए भी काफी पीछे हैं.

मो मेराज हुसैन-9, इकरा एकेडमी दरभंगा

मेरे लिए बहुत खास है गणतंत्र दिवस

हम सभी के लिए गणतंत्र दिवस का खास महत्व है. क्योंकि 26 जनवरी, 1950 को हमारा प्यारा संविधान लागू हुआ था. संविधान हमारे देश के विकास की पहली सीढ़ी है. मेरा भी सपना है कि मैं जीवन में कुछ ऐसा कर सकें, जिससे देश का नाम रोशन हो. इस खास मौके पर मैं कई कार्यक्रमों में दोस्तों के साथ भाग लेनेवाला हूं.

आयुष राज-7, नालंदा

हमारे गणतंत्र के परमवीर

नायक यदुनाथ सिंह
1-राजपूत रेजिमेंट, कश्मीर

वर्ष 1948 में 6 फरवरी को दुश्मनों का सामना करते हुए शहीद होनेवाले नायक यदुनाथ सिंह ने हमले के दौरान आगे आकर दुश्मनों से लोहा लिया. इन्होंने अपनी टुकड़ी का नेतृत्व करते हुए साथी सैनिकों की जान बचायी, लेकिन घायल यदुनाथ सिंह शहीद हो गये.

रमा रघोबा राणे
बॉम्बे इंजीनियर्स, राजौरी रोड

वर्ष 1948 में 8 से 11 अप्रैल, तक युद्ध के दौरान लेफ्टिनेंट राणे ने अदम्य साहस का प्रदर्शन करते हुए न सिर्फ तमाम लैंड माइंस का पता लगाया, बल्कि घायल होने के बावजूद सड़कों को खाली कराया, जिससे साथी सैनिकों की जान बची.

मेजर पीरू सिंह
6-राजपूताना राइफल्स

वर्ष 1948 में 18 जुलाई को मेजर पीरू सिंह ने अकेले ही दुश्मन की एक पोस्ट पर कब्जा कर लिया. इस दौरान दुश्मन की ओर से फेंके गये ग्रेनेड से वे बुरी तरह घायल हुए, लेकिन इन्होंने हार नहीं मानी और दुश्मन की एक और पोस्ट को तबाह कर शहीद हो गये.

लांस नायक करम सिंह
1-सिख रेजिमेंट, जम्मू-कश्मीर

वर्ष 1948 में 19 अक्तूबर को दुश्मन के हमले के दौरान लांस नायक करम सिंह सैन्य पोस्ट का नेतृत्व कर रहे थे. सिख रेजिमेंट ने हमले का मुंहतोड़ जवाब दिया और हमले के दौरान दो दुश्मन सैनिकों के पोस्ट के बेहद करीब आ जाने पर उन्होंने उन दोनों को भी मार गिराया.

कैप्टन गुरबचन सिंह
3/1-गोरखा राइफल्स, कांगो

वर्ष 1961 में 5 दिसंबर को कैप्टन गुरबचन सिंह सलारिया ने गोरखा राइफल्स के अन्य सैनिकों के साथ कांगो में यूएन फोर्स का हिस्सा बन कर युद्ध ऑपरेशन में हिस्सा लिया. वहां उन्होंने बहादुरी से लड़ते हुए अदम्य शौर्य और साहस का परिचय दिया. युद्ध के दौरान गंभीर रूप से घायल हुए कैप्टन सलारिया दुश्मन की ओर से किये गये एक हमले में शहीद हो गये.

अभिषेक राज, सीवान

आर्यन सिंह-6, हेलेंस स्कूल, सीतामढ़ी

मानस मेहता-6, सेंट जोसफ स्कूल, दलसिंहसराय

उत्सव राज-8, बीवीएसके, स्कूल, बाजीदपुर

नव ज्योति-3, ज्ञान भारती, दलसिंहसराय

सोनाली कुमारी-11, डीएवी, रांची

मो रुमान, इमैनुएल मिशन हाइ स्कूल, सीवान

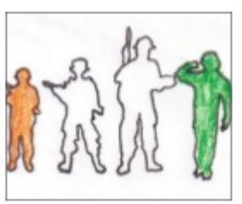

विशाल राज, क्लास-4

पेंटिंग ऑफ द वीक

आयुष राज-7, हैरिटेज स्कूल, नालंदा

सात्विक धर-2डी, सुरेंद्रनाथ सेनटेनरी स्कूल, रांची

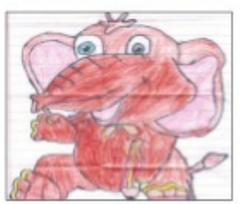

सृष्टि सोमरथ-4ए, लिटिल एंजल्स स्कूल, मुंगेर

राधा रानी-4, कर्नल पब्लिक स्कूल, रांची

प्रियंका कुमारी-7, आर्यभट्ट पब्लिक स्कूल, सीवान

प्रतीक आर्यन-1एफ, सेंट थॉमस स्कूल

निशा कुमारी-9, सीवान

www.rajteachers.com

सुभाषचंद्र बोस जयंती
23 जनवरी

बच्चो, नेताजी सुभाषचंद्र बोस इस कदर प्रभावशाली व्यक्तित्व के धनी थे कि अंगरेजों के मन में हमेशा उनका खौफ बना रहता था. अंगरेजी हुकूमत नेताजी के निधन की झूठी खबरें उड़ा देती थी, ताकि इससे देशवासियों का मनोबल टूट जाये.

हर भारतीय के लिए प्रेरणास्रोत हैं नेताजी सुभाषचंद्र बोस

यह घटना तब की है, जब नेताजी जर्मनी में थे. उसी दौरान एक बार जब उनके निधन की एक झूठी खबर आयी, तो उनकी आंखों से आंसू गिरने लगे. यह देख कर उनके साथी ने कहा - नेताजी, आप रो क्यों रहे हैं. किसी आदमी के जीवनकाल में उसके मरने की खबर फैल जाती है, तो उसकी उम्र बढ़ जाती है. यह सुन कर नेताजी ने अपने आंसू पोछते हुए कहा - यह तो मैं भी जानता हूं. मुझे इस बात की तनिक भी परवाह नहीं है कि अंगरेज मेरे संबंध में ऐसी भ्रामक बातें उड़ाते हैं, पर मुझे यह सोच कर बड़ा दुख हो रहा है कि मेरी मां को जब यह खबर मिली होगी, तो उसके दिल पर क्या बीती होगी. यह कहते-कहते नेताजी की आंखें फिर भर आयीं. नेताजी बाहर से जितने सख्त थे, अंदर से वे उतने ही नर्म थे.

सुभाषचंद्र बोस का जन्म 23 जनवरी, 1897 को कटक, ओडिशा (तब बंगाल) में हुआ था. द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान, अंगरेजों के खिलाफ लड़ने के लिए उन्होंने जापान के सहयोग से आजाद हिंद फौज का गठन किया था.

सिविल सेवा में चौथा स्थान

नेताजी के पिता जानकीनाथ बोस एक पब्लिक प्रॉसिक्यूटर थे, यही वजह रहा कि नेताजी को बचपन से पढ़ाई का माहौल मिला. नेताजी ने अपनी प्रारंभिक पढ़ाई कटक के रेवेंशॉ कॉलेजिएट स्कूल से पूरी की थी. उन्होंने आगे की पढ़ाई कैंब्रिज यूनिवर्सिटी से की. अंगरेजी शासन काल में भारतीयों के लिए सिविल सर्विसेज में जाना बहुत ही मुश्किल काम था. उन्होंने उस दौर में सिविल सर्विसेज की परीक्षा में चौथा स्थान हासिल किया. बाद में स्वतंत्रता आंदोलन में कूदने के लिए इन्होंने 1921 में सिविल सर्विस की नौकरी से इस्तीफा दे दिया. इसके बाद उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ज्वाइन किया.

जेल से निकल कर बने मेयर

वर्ष 1924 में वह कोलकाता के चीफ एग्जिक्यूटिव ऑफिसर के पद के लिए चुने गये. इस दौरान आतंकी गतिविधियों में शामिल होने का आरोप लगा कर ब्रिटिश सरकार ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया. शुरू में उनको अलीपुर जेल में रखा गया, बाद में वहां से उनको मांडले जेल भेज दिया गया. वे जेल से छूट कर आये तो कोलकाता के मेयर चुने गये. वर्ष 1938 में सुभाष चंद्र बोस हरिपुरा कांग्रेस अधिवेशन में अध्यक्ष चुने गये, लेकिन गांधी जी के अहिंसा के रास्ते को लेकर मतभेद के चलते उन्होंने कांग्रेस छोड़ने का निर्णय लिया.

आजादी के लिए पहुंचे जर्मनी

इस बीच दूसरा विश्व युद्ध छिड़ गया. बोस का मानना था कि अंगरेजों के दुश्मनों से मिल कर आजादी हासिल की जा सकती है. उनके विचारों के देखते हुए उन्हें ब्रिटिश सरकार ने कोलकाता में नजरबंद कर लिया, लेकिन वह अफगानिस्तान और सोवियत संघ होते हुए जर्मनी जाने में कामयाब रहे. वहां वह हिटलर से मिले. उन्होंने ब्रिटिश हुकूमत और देश की आजादी के लिए कई काम किये. वे 1943 में जर्मनी छोड़ कर जापान पहुंचे. जापान से वह सिंगापुर पहुंचे, जहां उन्होंने कैप्टन मोहन सिंह द्वारा स्थापित आजाद हिंद फौज की कमान अपने हाथों में ले ली. उन्होंने आजाद हिंद फौज का पुनर्गठन किया. इसमें महिलाओं के लिए रानी झांसी रेजिमेंट का भी गठन किया. नेताजी अपनी आजाद हिंद फौज के साथ 1944 में बर्मा पहुंचे. यहीं पर उन्होंने अपना प्रसिद्ध नारा दिया 'तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा.'माना जाता है कि इसी बीच 18 अगस्त, 1945 को टोक्यो जाते समय ताइवान के पास नेताजी की मौत हवाई दुर्घटना में हो गयी. हालांकि, उनका शव नहीं मिल पाया. यही वजह है कि नेताजी की मौत और उसके कारणों पर आज भी विवाद बना हुआ है.

हमारे गणतंत्र के परमवीर

मेजर धन सिंह थापा

1/8-गोरखा राइफल्स, लद्दाख

वर्ष 1962 में चीन की ओर से किये गये हमले के दौरान 21 अक्तूबर को मेजर धन सिंह थापा ने वीरता के साथ दुश्मनों का सामना किया. कई सैनिकों को उन्होंने बिना किसी हथियार के हाथापाई में ही मार गिराया. हमले के बाद उन्हें शहीद मान लिया गया था, लेकिन बाद में पता चला कि उन्हें दुश्मन सेना ने बंदी बनाया है. हालांकि बाद में इन्हें रिहा कर दिया गया था.

सूबेदार जोगिंदर सिंह

1-सिख रेजिमेंट, अरुणाचल प्रदेश

वर्ष 1962 में सूबेदार सिंह ने 20 से 23 अक्तूबर तक चीन की ओर से किये गये हमले के दौरान अरुणाचल प्रदेश में उनका डट कर सामना किया. गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद इन्होंने हार मानने से इनकार कर दिया और अंत में लड़ते हुए शहीद हो गये. इनकी वीरता के लिए इन्हें मरणोपरांत परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया.

मेजर शैतान सिंह

13-कुमाऊं रेजिमेंट, लद्दाख

वर्ष 1962 में चीनी आक्रमण के दौरान 18 नवंबर को रेजांग ला जैसी महत्वपूर्ण पोस्ट संभाल रहे मेजर शैतान सिंह ने चीन की विशाल सेना का डट कर सामना किया. घायल होने के बाद भी उन्होंने हार नहीं मानी और अंत में साहस के साथ लड़ते हुए वे शहीद हो गये. मेजर शैतान सिंह को मरणोपरांत परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया.

लेफ्टिनेंट कर्नल एबी तारापोर

17 पूना हॉर्स रेजिमेंट, सियालकोट

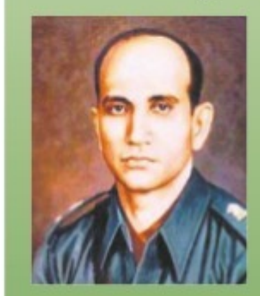

वर्ष 1965 में 11 से 16 सितंबर के बीच लेफ्टिनेंट कर्नल तारापोर को पाकिस्तान स्थित फिलौरा पोस्ट पर हमला करने का आदेश मिला था, जहां उन्होंने युद्धक टैंकों के बीच बहादुरी से दुश्मन का सामना किया. गंभीर रूप से घायल होने पर भी उन्होंने हार नहीं मानी और अंत में बहादुरी के साथ लड़ते हुए शहीद हो गये. इनके अदम्य साहस और शौर्य के लिए इन्हें मरणोपरांत परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया.

हवलदार अब्दुल हामिद

4-ग्रेनेडियर्स, चीमा, खेम कारन

कंपनी क्वार्टर मास्टर हवलदार अब्दुल हामिद 10 सितंबर, 1965 को पाकिस्तानी सैनिकों द्वारा खेम कारन सेक्टर पर किये गये हमले का सामना करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए. इन्हें मरणोपरांत सर्वोच्च वीरता पुरस्कार परमवीर चक्र से विभूषित किया गया.

माइंड गेम्स-47

1. अरुण, टीना के पिता हैं, तो अरुण, टीना के पिता का क्या है?
2. वह क्या है, जिसके पास एक आंख है, फिर भी नहीं देख सकती?
3. अगर 2 + 6 + 10 + 14 + 18 + 22 + 26 + 3 0+ 34 + 38 = 200 है, तो इनमें से ऐसे 5 नंबर चुनो, जिनका कुल जोड़ 100 हो.
4. दुनिया में ऐसी कोई जगह नहीं, जहां मैं नहीं जा सकती. मैं दुनिया के हर देश में जा सकती हूं. बस मैं खुद को एक कोने में रखती हूं. बताओ तो मैं कौन हूं?

माइंड गेम्स-46 का उत्तर

1. 20 चिड़िया 2. बंद होना और बुझना एक ही चीज है. ट्रक और पल्सर से टक्कर होने के बाद ट्रक की लाइट खराब हो गयी और बंद हो गयी या ये कहो बुझ गयी. 3. कुछ भी नहीं
4 क्योंकि स्टेपनीवाली टायर पंक्चर थी. **पिक्चर गेम** : अल्फ्रेड नोबेल

विनर्स

अभिनव राज
गोविंदपुर

अभिषेक कुमार
बेतिया

आयुष राज
दलसिंहसराय

भरत कुमार
समस्तीपु र

फरजान अहमद
मधु पु र

इबरान वारसी
पालोजोरी

इन्होंने भी दिये सही जवाब : गिरिजेश यादव, बांका. **राज राजीव**, गोपालगंज. **श्याम मुंडा**, रांची. तुम सभी को ढेरों बधाई. इस अंक के लिए भी तुम्हारे जवाबों का इंतजार रहेगा. तब तक दिमाग लगाओ.

तुम इन माइंड गेम्स के उत्तर अपने अपने फोटो के साथ इमेल द्वारा भेजो. अगले अंक में हम सही जवाब देनेवाले बच्चों के नाम फोटो के साथ प्रकाशित करेंगे.
हमारा इमेल है- balprabhat@ prabhatkhabar.in

स्मार्ट बनने में तुम्हें मदद करेंगे ये एप्स

तकनीक ने तुम्हें अपना काम स्मार्ट तरीके से करना सिखाया है. टाइम मैनेजमेंट की बात हो या किसी चीज की जानकारी हासिल करनी हो या फिर घर बैठे दोस्तों से जुड़ना हो, एंड्रॉयड एप्स हर कदम पर तुम्हारा काम आसान बना रहे हैं. इन दिनों कई ऐसी वेबसाइट और एप्लिकेशन आयी हुई हैं, जो न सिर्फ तुम्हारा काम आसान करती हैं, बल्कि तुम्हें स्मार्ट भी बनाती हैं. ये एप्स तुम्हें एक टीचर की तरह समझाने में कामयाब हो सकती हैं.

मैनेज करो अपना टाइम

स्कूल में तो क्लास टीचर के प्रेशर में पढ़ाई हो जाती है, लेकिन घर पर पढ़ाई के लिए टाइम मैनेजमेंट की भूमिका काफी अहम होती है. इसके लिए लाइफ टॉपिक्स एप बहुत मददगार साबित हो सकती है. इसके जरिये लाइफ के कार्यों को आसानी से मैनेज किया जा सकता है. कब खेलना है और किस टाइम पढ़ाई करनी है, इसके लिए भी तुम्हें यह एप हेल्प करेगी, लेकिन एक दिक्कत है कि यह एप अभी सिर्फ आइफोन के लिए है और फ्री में उपलब्ध नहीं है.

इस एप से जानो अपना अटेंडेंस

यह काफी मजेदार अटेंडेंस ट्रैकर एप है. के-12 अटेंडेंस एप के जरिये तुम अपनी अटेंडेंस का पता लगा सकते हो और स्कूल में होनेवाले आवश्यक कार्यक्रमों आदि की भी जानकारी रख सकते हो. हां, बशर्ते स्कूल के-12 के वेबसाइट वर्जन से जुड़ी होनी चाहिए. पिछले दस दिनों तक का आंकड़ा इस एप में तुम देख सकते हो. इससे स्कूल की किसी भी एक्टिविटी से तुम अपडेट रह सकते हो. इसमें अपडेट का अलर्ट तुम्हें मिल जाता है.

के-12 टाइम्ड रीडिंग प्रैक्टिस है कमाल

के12 टाइम्ड रीडिंग प्रैक्टिस एप से तुम अपने पढ़ने और सीखने की क्षमता को बढ़ा सकते हो. यह एप काफी आकर्षक है, जिससे तुम्हें रोचक उदाहरण की मदद से सीखने के लिए प्रेरित किया जाता है. इसका इस्तेमाल करते हुए न सिर्फ पढ़ाई की जा सकती है, बल्कि तुम भाषा पर मजबूत पकड़ बना सकते हो. अगर तुम्हें सही उच्चारण के साथ पढ़ने में दिक्कत आती है, तो यह एप तुम्हारे काफी काम आ सकता है.

यह एप बतायेगा कितनी देर चलाना है गैजेट

तकनीक और स्मार्टफोन के विकास की वजह से सबसे ज्यादा समस्याएं स्मार्टफोन पर ज्यादा समय बिताने को लेकर उत्पन्न हो रही हैं. स्क्रीन टाइम एप तुम्हें हेल्दी मीडिया हेबिट को डेवलप करने मदद करेगी. यह तुम्हें निश्चित समय तक निश्चित वेबसाइट को सर्फ करने, उसे एक्सेस करने और उस पर समय बिताने के लिए निर्देश देगी. इससे तुम्हें ल समय तक डिवाइस इस्तेमाल करने के बाद रेस्ट मिल पायेगा.

गूगल कैलेंडर एप में कई नये फीचर

गूगल ने अपने कैलेंडर एप के गोल फीचर को गूगल फिट और एप्पल हेल्थ एप्लिकेशन के साथ इंटीग्रेट कर दिया है. अब इसकी बे मदद से तुम आसानी से अपने फिटनेस संबंधी डेटा को ट्रैक कर सकते हो. अब एंड्रॉयड फोन या आइफोन में यूजर एक्टिविटी रिकॉर्ड हो जायेगी. इसके बाद गूगल कैलेंडर एप इसे ऑटोमेटिकली गोल्स एज डन के तौर पर मार्क कर देगा. दरअसल, गूगल ने पिछले साल गूगल कैलेंडर एप में गोल्स एप लॉन्च किया था. गूगल के मुताबिक, अगर तुम सुबह 6.30 बजे दौड़ने के लिए लक्ष्य निर्धारित करते हो, लेकिन सात बजे तक अगर इसे पूरा नहीं करते, तो कैलेंडर एप इसे तुम्हारे मुताबिक एडजस्ट करेगा और तुम्हारी एक्टिविटी के लिए सबसे बेहतर समय खोजने में मदद करेगा.

किंडल एप पर पढ़ो ढेर सारे इ-बुक्स

किंडल एप पर दिये गये इ-बुक्स बच्चों के लिए काफी मददगार साबित हो सकते हैं. इसे आसानी से कभी भी और कहीं भी पढ़ा जा सकता है और इसमें कई सारी किताबों को इ-बुक के रूप में रखा जा सकता है. बस इसके लिए तुम्हें इसे रिचार्ज करते रहना होता है. इसमें नये-नये बुक्स को तुम शामिल कर सकते हो. गूगल प्ले स्टोर पर इस नाम से मिलते-जुलते कई एप्स मौजूद हैं. तुम इसे वहां से फ्री में डाउनलोड कर सकते हो. हालांकि बुक्स की कीमत तुम्हें चुकानी पड़ती है.

इन एप्स से लो रिपब्लिक डे से जुड़ी जानकारियां

हर वर्ष 26 जनवरी को हम गणतंत्र दिवस के रूप में मनाते हैं. इसी दिन हमारा संविधान लागू हुआ था. इस दौरान हम देश के वीर सपूतों को याद कर उन्हें नमन करते हैं. गणतंत्र दिवस से रिलेटेड कोट्स, मैसेज, वॉलपेपर या अन्य जानकारियां हासिल करने के लिए तुम कई सारे एप्स की मदद ले सकते हो. इनमें रिपब्लिक डे एप, रिपब्लिक डे फोटो फ्रेम, रिपब्लिक डे मैसेजेज, रिपब्लिक डे कोट, आदि तुम्हारे काम आयेंगी.

इस वेबसाइट पर देखो परेड की तसवीर

रिपब्लिक डे डॉट निक डॉट इन (republic-day.nic.in)वेबसाइट पर तुम पिछले 10 वर्षों के गणतंत्र दिवस के परेड की तसवीरें देख सकते हो. इन मौकों पर देश के राष्ट्रपति द्वारा दिये गये राष्ट्र के नाम उनके संदेश को भी सुन सकते हो. फ्लैग होस्टिंग सेरेमनी की अद्भुत तसवीरें तुम्हें यहां मिल जायेंगी.

हमारे गणतंत्र के परमवीर

लांस नायक अल्बर्ट एक्का

14-गार्ड्स, गंगासागर

वर्ष 1971 के भारत-पाक युद्ध के दौरान भारतीय क्षेत्र पर दोबारा कब्जा करने का आदेश मिलने पर इन्होंने अदम्य वीरता का परिचय दिया. अंतिम सांस लेने से पहले लांस नायक अल्बर्ट एक्का ने दुश्मनों के बंकर को नष्ट कर दिया. इन्हें मरणोपरांत परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया. इनका जन्म 27 दिसंबर, 1942 को रांची में हुआ था.

निर्मलजीत सिंह सेखो

18-फ्लाइंग बुलेट स्क्वाईन, श्रीनगर

भारत-पाक युद्ध के दौरान 14 दिसंबर, 1971 को इन्होंने दुश्मनों के दो विमानों को नष्ट कर दिया, लेकिन इस दौरान इनका विमान भी हादसे का शिकार हो गया. इनके पराक्रम को सलाम करते हुए इन्हें मरणोपरांत परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया. फ्लाइंग ऑफिसर सेखो एयर फोर्स से परमवीर चक्र पानेवाले इकलौते वीर सपूत हैं.

अरुण खेत्रपाल

17-पूना हॉर्स, 47 इनफेंटरी ब्रिग्रेड

भारत-पाकिस्तान युद्ध में विरोधी सेना से लोहा लेते हुए 16 दिसंबर, 1971 को वीरगति को प्राप्त हुए. सेकेंड लेफ्टिनेंट खेत्रपाल के शौर्य तथा बलिदान को देखते हुए उन्हें मरणोपरांत परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया. खेत्रपाल ने घंटों तक दुश्मन सेना से अकेले ही मुकाबला किया, जिसकी वजह से दुश्मन भारतीय बंकर पर कब्जा करने में नाकाम रहे.

मेजर होशियार सिंह

ग्रेनेडियर रेजिमेंट, शकरगढ़ सेक्टर

मेजर होशियार सिंह ने 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध के दौरान 17 दिसंबर को घायल होने के बावजूद संघर्ष विराम तक मैदान नहीं छोड़ा. मेजर बुरी तरीके से घायल थे, लेकिन उन्हें लगा कि अगर वे हार मानते हैं, तो उनके साथियों का मनोबल टूटेगा. इनके इस अद्भुत पराक्रम के लिए इन्हें परमवीर चक्र से विभूषित किया गया.

नायब सूबेदार बाना सिंह

जम्मू एवं कश्मीर लाइट इनफेंटरी

23 मई, 1987 को पाकिस्तानी घुसपैठियों के कब्जेवाले इलाके को खाली कराने के लिए नायब सूबेदार बाना सिंह ने अपनी टीम का शानदार नेतृत्व किया. इनके इस कुशल नेतृत्व के लिए इन्हें सर्वोच्च वीरता सम्मान परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया.

www.rajteachers.com

मैथ मैजिक

राजू और रिंकी दोनों भाई-बहन हैं और उनको गणित काफी पसंद भी है. उनकी सबसे मजेदार बात यह है कि आपस में हमेशा वे पढ़ाई को ले कर हमेशा कॉम्पीटीशन करते हैं. वे यह पता लगाते हैं कि किसे सवा ल को दो-तीन तरीके से निका लना आता है. आज रिंकी अपने भाई को क्यूब निकालने की एक और विधि बताने जा रही है. तुम भी ध्यान से समझ लो. तुम्हें इसमें मजा आयेगा.

पुनीता कुमारी
संचालिका, मैथ मैजिक क्लब
इमेल : 10punita@gmail.com

पिछले अंक में तुमने निम्नलिखित फॉर्मूला सीखा था.

$(a+b)^3 = a^3 + 3a^2b + 3ab^2 + b^3$

फॉर्मूला के RHS को तुम इस तरह दो भाग में तोड़ कर लिख सकते हो. पहले भाग में टर्म a,ab,ab,ab और b दूसरे भाग का टर्म होगा 2ab और 2ab

$$a^3 + a^2b + ab^2 + b^3$$
$$+ 2a^2b + 2ab^2$$
$$a^3 + 3a^2b + 3ab^2 + b^3$$

तुमने देखा कि इन दोनों भाग का योग RHS के बराबर होता है. पहले भाग को देखो कि इसके टर्म a^3 को अगर हम b/a से गुणा करते हैं, तो हमें दूसरा टर्म a^2b मिलता है और फिर अगर दूसरा टर्म a^2b को b/a से गुणा करते हैं, तो हमें तीसरा टर्म ab^2 मिलता है. फिर, फाइनल टर्म के लिए मुझे फिर ab को b/a से गुणा करना होगा और b^3 मिलेगा.

तुमने यह ध्यान दिया होगा कि जैसे ही हम बायें से दायें की तरफ बढ़ते हैं, तो टर्म ज्योमेट्रिक प्रोग्रेशन में और उनके बीच का रेशियो (अनुपात) b/a होता है. दूसरे भाग में देखोगे कि ऊपरवाले भाग के बीच के टर्म को 2 से गुणा करने पर यह प्राप्त हुआ है. अब ध्यान से समझनेवाली बात है कि पहला भाग निकालने में हमें बायें से दायें ज्योमेट्रिक प्रोग्रेशन b/a में बढ़ना पडेगा, या फिर दायें से बायें जाने के लिए ज्योमेट्रिक प्रोग्रेशन a/b करके जाना पड़ेगा. पहला टर्म a^3 और फिर b/a से गुणा करते हुए आगे बढ़ जायेंगे. फाइनल क्यूब निकालने के लिए हमें दोनों भाग को जोड़ना पड़ेगा.

जब भी कोई संख्या का क्यूब निकालना हो, तो हमलोग उसे दो भाग a और b में बांट देंगे.

उदाहरण 1: 52 का क्यूब निकालो (a = 5 और b = 2)

इस संख्या में a का मान 5 और b का मान 2 है. हमलोग बायें से दायें की तरफ जायेंगे रेशियो(अनुपात) b/a का मान 2/5 है. पहला भाग इस तरह होगा $5^3 = 125$

$2/5 \times 125 = 50$

$2/5 \times 50 = 20$

$2^3 = 8$

दूसरे भाग के लिए मैंने तुम्हें बताया कि पहले भाग के बीच के टर्म को दोगुना कर देंगे.

125	50	20	8
	100	40	
125	150	60	8

अब उत्तर लाने के लिए तीन शून्य पहला टर्म में, दो शून्य दूसरे टर्म में, एक शून्य तीसरे टर्म में और चौथे में कोई भी शून्य नहीं लगायेंगे और सबको जोड़ देंगे.

125000
15000
600
8
140608

इस तरह यह 12 का क्यूब हुआ.

उदाहरण 2 : 12 का क्यूब निकालो. (a = 1, b = 2)

पहला भाग 1^3	= 1
2/1 ×1	= 2
2/1 ×2	= 4
2^3	= 8

दूसरा भाग, पहले भाग के बीच के टर्म को दोगुना कर के

	2	4	8
	4	8	
1	7	2	8

पहले टर्म में तीन, दूसरे में दो, तीसरे में एक शून्य डालेंगे.

1000 + 600+ 120 + 8
=1728

नोट : अगर गणित से जुड़ी तुम्हारी कोई उलझन हो या शेयर करने के लिए कोई मजेदार ट्रिक्स हो, तो तुम सीधे मुझे इमेल कर सकते हो.

हमारे गणतंत्र के परमवीर

मेजर रामास्वामी परमेश्वरन
8-माहर रेजीमेंट

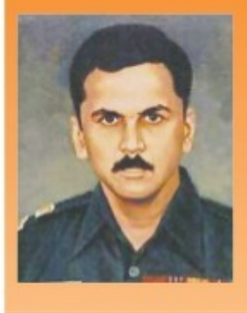

मेजर रामास्वामी ने 25 नवंबर, 1987 को श्रीलंका में ऑपरेशन पवन के दौरान छाती में गोली लगने के बावजूद अदम्य साहस दिखाते हुए एक आतंकवादी की राइफल छीनी और उसे मार डा ला और वीरगति को प्राप्त हुए. इन्हें मरणोपरांत परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया. जन्म 13 सितंबर, 1946 को हुआ था.

कैप्टन विक्रम बत्रा
13-जम्मू एवं कश्मीर राइफल

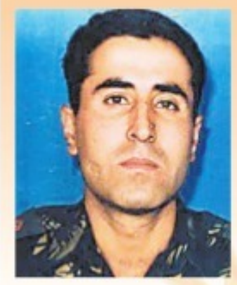

कारगिल युद्ध के दौरान 07 जु लाई, 1999 को बुरी तरह से जख्मी हो चुके अपने साथी सैन्य अधिकारी की जान बचाने के दौरान दुश्मनों की गोली लगी. इनकी वीरता के लिए सम्मानित करते हुए मरणोपरांत परमवीर चक्र दिया गया. इनका जन्म 9 सितंबर, 1974 को पालमपुर में हुआ था.

लेफ्टिनेंट मनोज कुमार पांडेय
1/11-गोरखा राइफल्स

कारगिल युद्ध के दौरान 2 और 3 जु लाई को लेफ्टिनेंट ने घुसपैठियों को बटा लिक सेक्टर छोड़ने पर मजबूर कर दिया और खालाबुर क्षेत्र में तिरंगा लहराने के लिए प्राण त्यागने तक संघर्षरत रहे. इन्हें मरणोपरांत परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया. इनका जन्म 25 जून, 1975 को सीतापुर में हुआ था.

ग्रेनेडियर योगेंद्र सिंह यादव
18-ग्रेनेडियर

कारगिल युद्ध के दौरान 3 और 4 जुलाई, 1999 को तीन गोलियां लगने के बावजूद 60 फुट की ऊंचाई पार की और दुश्मन के बंकर पर ग्रेनेड फेंका, जिसमें दुश्मन सेना के चार जवान मारे गये. इसके लिए उन्हें परमवीर चक्र से विभूषित किया गया है. इनका जन्म 10 मई, 1980 को बुलंदशहर में हुआ था.

राइफलमैन संजय कुमार
13-जम्मू एवं कश्मीर राइफल्स

कारगिल युद्ध में 4 जुलाई, 1999 को इन्होंने लद्दाख क्षेत्र में दुश्मन सेना के जवान की मशीनगन छीन कर उनके तीन जवानों को मार गिराया. इसके लिए इन्हें परमवीर चक्र दिया गया. इनका जन्म 3 मार्च, 1976 को हिमाचल प्रदेश में हुआ था.

हमारी दुनिया

बर्फ में फंसे हिरन को बचाया

अमेरिका के कनेक्टिकट प्रांत में भारी हिमपात के बाद कड़ाके की सर्दी पड़ी. तापमान इतना गिर गया कि वहां फॉर्मिंग्टन नदी भी जम गयी. फिसलन के कारण एक हिरण जमी हुई नदी में गिर कर फंस गया. काफी कोशिश करने के बाद वह थक कर निढाल-सा हो गया था. तभी वहां से गुजरते कुछ लोगों की नजर छटपटाते हिरण पर पड़ी. उन्होंने कंब ल और रस्सियों के सहारे जमी हुई नदी से हिरण को सकुशल बाहर निकाला. यह वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है. दरअसल, इस समय हिमपात के चलते रूस, अमेरिका और यूरोप के बड़े हिस्से में कड़ाके की सर्दी पड़ रही है. इनसानों के साथ इसकी मार जानवरों पर भी पड़ रही है और कई जगहों पर नदियां जम चुकी हैं.

वैज्ञानिकों ने किया धरती में सिलिकन छिपे होने का दावा

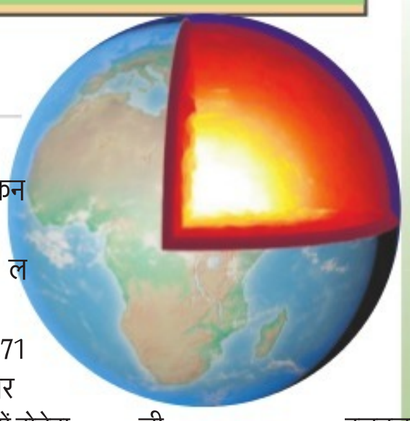

जापान के वैज्ञानिकों ने अर्थ कोर में छिपे खनिजों के रहस्य को सुलझाने का दावा किया है. उनके मुताबिक, अर्थ कोर में 85 प्रतिशत लोहा और 10 प्रतिशत निकेल है, लेकिन बची हुई 5 प्रतिशत चीजों की वैज्ञानिक लंबे समय से खोज रहे थे. वैज्ञानिकों का दावा है कि यह तत्व सिलिकन हो सकता है. सैन फ्रांसिस्को में अमेरिकन जियोफिजिक ल यूनियन की मीटिंग में जापानी वैज्ञानिकों ने खोज सामने रखी. वैज्ञानिकों के मुताबिक, बाहरी सतह से अर्थ कोर करीब 5,100 से 6,371 किलोमीटर नीचे है. इसका आकार एक बड़ी गेंद जैसा है और व्यास 1,200 किलोमीटर तक है. वैज्ञानिकों ने पृथ्वी के गर्भ में होनेवा ली हलचल (सिस्मिक मूवमेंट) के आंकड़ों को एक्सपेरिमेंट के डाटा से मिलाया और सिलिकन का दावा किया.

बढ़ती उम्र में भी सक्रिय रहता है सेरेब्रेल कॉरटेक्स

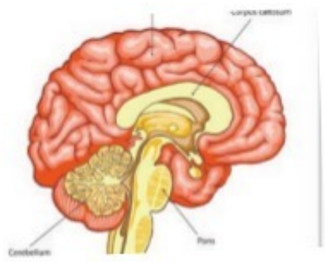

माना जाता है कि उम्र बढ़ने के साथ लोगों में चेहरे पहचानने की क्षमता कम हो जाती है. अब पता चला है कि बढ़ती उम्र में भी हमारे मस्तिष्क का वह हिस्सा सक्रिय रहता है, जो चेहरे की पहचान करता है. स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी में मनोविज्ञान के प्रोफेसर कैलनिट ग्रिल के नेतृत्व में शोधकर्ताओं ने बच्चों और वयस्कों के दिमाग पर एक नयी प्रकार की इमेजिंग तकनीक का इस्तेमाल कर इसकी जांच की. इस जांच में सबसे अधिक ध्यान सेरेब्रल कॉरटेक्स पर दिया गया.

नॉर्वे ने बंद किया एफएम रेडियो का प्रसारण

नॉर्वे दुनिया का ऐसा पहला देश बन गया, जहां एफएम रेडियो सेवा बंद कर दी गयी है. अधिकारियों के मुताबिक, एफएम बंद करके उसकी जगह डिजिटल ऑडियो ब्रॉडकास्टिंग (डीएबी) तकनीक का इस्तेमा ल होगा. बीते 11 जनवरी को स्थानीय समयानुसार 11 बज कर 11 मिनट पर देश में एफएफ ब्रॉडकास्टिंग सिस्टम बंद कर दिया गया. सरकारी रेडियो एनआरके और अन्य निजी ब्रॉडकास्टर्स ने अपना एफएम प्रसारण बंद करके डीएबी से प्रसारण शुरू कर दिया है. अधिकारियों के मुताबिक, अब धीरे-धीरे पूरे देश के रेडियो चैनल्स को एफएम से डीएबी पर लाया जायेगा.

अकेलेपन को दूर करेगा रोबोट किरोबो मिनी

कम होती आबादी से परेशान जापान में अकेलापन दूर करनेवाले दो रोबोट लॉन्च किये जा रहे हैं. इनमें से एक बिल्कु ल खिलौने की तरह दिखता है. छोटा होने के कारण इसे कहीं भी साथ ले जाया जा सकता है. इसे टोयटा ने बनाया है. इसका नाम किरोबो मिनी रखा गया है. जापानी भाषा में किबो का मतलब उम्मीद है, जबकि रोबोट से रो शब्द लिया गया है. चार इंच लंबा यह रोबोट बच्चे की तरह बरताव करता है. बच्चों की तरह बात करने से यह काफी लोकप्रिय भी हो रहा है.

बाल प्रभात टीम
■ **संयोजन** : रजनीकांत पांडे ■ **संपादकीय सहयोगी** : विवेकानंद सिंह, अजय कुमार
■ **डिजाइन** :रॉकी रंजन